Q→ जैन दर्शन के बंधन और मोक्ष का वितरण दें?

Ans→ जैन दर्शन में अनन्त जीवों की सत्ता को स्वीकार किया गया है तथा जीव को एक चेतन द्रव्य की संज्ञा दी गई है। जैन दार्शनिकों के अनुसार जीव अपने शुद्ध स्वरूप को अनन्तचतुष्टय से युक्त होता है। यहाँ अनन्तचतुष्टय से तात्पर्य है कि जीव का स्वरूप तब शुद्ध होता है जब उसमें अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति, अनन्त आनंद रहता है किन्तु तब वह बन्धन में पड़ जाता है अर्थात् उसका स्वरूप उसी प्रकार ढक जाता है जिस प्रकार बादल, सूर्य के प्रकाश को ढक देते हैं। जब जीव मोक्ष प्राप्त कर लेता है तो वह अपने शुद्ध स्वरूप अर्थात् अनन्तचतुष्टय से युक्त स्वरूप को पुनः प्राप्त कर लेता है। अतः बन्धन से मुक्ति प्राप्त करना अन्य भारतीय दर्शनों के समान जैनधर्म का भी परम आध्यात्मिक लक्ष्य है।

जैन दार्शनिकों के अनुसार जीव का कर्म पुद्गलों से सम्बन्धित होना ही बन्धन है। बन्धन की स्थिति में दुःख तथा जन्म-मरण चक्र की विद्यमानता रहती है जीव का कर्म पुद्गलों से मुक्त होना ही मोक्ष है।

Teacher's Signature

यहाँ मोक्ष के लिए कैवल्य शब्द का प्रयोग किया गया है। मोक्ष की स्थिति में समस्त दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति तथा जन्म-मरण चक्र की समाप्ति हो जाती है।

जैन दार्शनिकों के अनुसार जब जीव शरीर धारण करता है तो उस समय उसमें अज्ञान तथा दुष्प्रवृत्तियाँ होती है। जैन दार्शनिक अज्ञान का कोई कारण नहीं बताते। वे कहते हैं कि अज्ञान अनादि है, किन्तु अनन्त नहीं बल्कि शान्त है। जीव में विद्यमान दुष्प्रवृत्तियों के कारण जैन तीर्थंकरों में अश्रद्धा तथा अविश्वास बताया गया है। इन दुष्प्रवृत्तियों को जैन दर्शन में 'कषाय' कहा गया है।

जैन दार्शनिकों ने अज्ञान को ही जन्म का कारण बताया है। अज्ञान होने के कारण ही हम स्वार्थ प्रेरित कर्म करते हैं जिससे संस्कारों का निर्माण होता है। ये संस्कार ही कर्म कहलाते हैं। इन संस्कारों से ही निश्चित होता है कि जीव कैसा शरीर धारण करेगा। जब

जीव जन्म लेता है अर्थात् शरीर धारण करता है तो उसका स्वरूप अशुद्ध हो जाता है क्योंकि जीव में दुष्प्रवृतियाँ होती हैं। दुष्प्रवृतियां जीव की ओर कुछ सूक्ष्म जड़तत्वों जिन्हे जैन दर्शन में 'पुद्गल' कहा गया है, को आकर्षित करती है जो जीव की ओर प्रवाहित होकर उसमें प्रवेश कर जाते हैं और जीव को जकड़ लेते हैं। पुद्गलों का जीव की ओर प्रवाहित होना ही 'आस्रव' कहलाता है। जब पुद्गल जीव में प्रवेश कर जाते हैं तब इन्हें 'कर्म पुद्गल' कहते हैं। इस बन्धन की स्थिति में जीव का अनन्तचतुष्टय से युक्त स्वरूप ढक जाता है। अतः मुक्ति प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि कर्म पुद्गलों से मुक्त हो जाए।